सारंगी

हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

1

© NCERT
not to be republished

QRickit
0122

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2024-25

0122 – सारंगी
कक्षा 1 के लिए हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5292-423-3

प्रथम संस्करण
जून 2023 ज्येष्ठ 1945

पुनर्मुद्रण
मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 500T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2023

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा बी.एम. ऑफ़सेट प्रिंटर्स, डी–247/17, सेक्टर–63, नोएडा (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पानीहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनूप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	:	*अमिताभ कुमार*
संपादन सहायक	:	*ऋषिपाल सिंह*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*दीपक जैसवाल*

आवरण, चित्रांकन एवं लेआउट
ग्रीन ट्री डिज़ाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि.

© NCERT not to be republished

आमुख

भारत में बच्चों के सबसे प्रारंभिक वर्षों में उनके सर्वांगीण विकास को पोषित करने की एक समृद्ध परंपरा रही है। ये परंपराएँ परिवार, रिश्तेदार, समुदाय, समाज एवं देखभाल व सीखने के औपचारिक संस्थानों के लिए पूरक की भूमिका निभाती हैं। बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्षों में, पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरित संस्कारों के विकास को समाहित करते इस समग्र दृष्टिकोण का उनके विकास, स्वास्थ्य, व्यवहार और उत्तरवर्ती वर्षों में संज्ञानात्मक क्षमताओं के प्रत्येक पक्ष पर आजीवन एक महत्वपूर्ण व सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों के जीवनपर्यंत विकास में प्रारंभिक वर्षों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* (एन.ई.पी. 2020) ने 5 + 3 + 3 + 4 पाठ्यचर्या एवं शिक्षाशास्त्रीय संरचना की परिकल्पना की है जो पहले पाँच वर्षों (3–8 आयु वर्ग) पर समुचित ध्यान देती है, जिसे आधारभूत स्तर की संज्ञा दी गई है। कक्षा 1 व 2 भी आधारभूत स्तर का एक अभिन्न अंग हैं। तीन से छह वर्ष के बच्चों के समग्र विकास की आधारशिला के प्रथम चरण 'बालवाटिका' से आगे बढ़ते हुए व्यक्ति का आजीवन सीखना, सामाजिक एवं भावनात्मक व्यवहार और समग्र स्वास्थ्य इसी महत्वपूर्ण आधारभूत स्तर के अंतराल में प्राप्त अनुभवों पर निर्भर करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति इस स्तर के लिए एक विशिष्ट राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की संस्तुति करती है, जो न केवल आधारभूत स्तर पर उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने में, अपितु विद्यालयी शिक्षा के अगले चरणों में इसकी गतिशीलता सुनिश्चित करने के लिए भी संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होगी। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अंतर्गत उल्लिखित सिद्धांतों और उद्देश्यों, तंत्रिका विज्ञान एवं प्रारंभिक बाल्यकाल शिक्षा सहित विभिन्न विषयों के अनुसंधान, व्यावहारिक अनुभव व संचरित ज्ञान तथा राष्ट्र की आकांक्षाओं व लक्ष्यों के आधार पर, आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एफ.एस.) का विकास किया गया जिसका विमोचन 20 अक्तूबर 2022 को किया गया था। तत्पश्चात एन.सी.एफ.-एफ.एस. के पाठ्यचर्या संबंधी उपागम के अनुरूप पाठ्यपुस्तकों की संरचना की गई। ये पाठ्यपुस्तकें कक्षा में सीखने और परिवार तथा समुदाय में सार्थक अधिगम-संसाधनों के साथ सीखने को महत्व देते हुए बच्चों के व्यावहारिक जीवन से जुड़ने का प्रयास करती हैं।

आधारभूत स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा *तैत्तिरीय उपनिषद्* में वर्णित 'पंचकोश विकास' (मानव व्यक्तित्व के पाँच कोशों का विकास) की आधारभूत अवधारणा से संबद्ध है। एन.सी.एफ.-एफ.एस.

© NCERT not to be republished

सीखने के पाँच आयामों, जैसे— शारीरिक एवं गत्यात्मक, समाज-संवेगात्मक, भाषा एवं साक्षरता, संस्कृति तथा सौंदर्यबोध को पंचकोश की भारतीय परंपरा के साथ जोड़ती है। ये पाँच कोश इस प्रकार से हैं— अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश। इसके अतिरिक्त, यह घर पर अर्जित बच्चों के अनुभवजन्य ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को एकीकृत करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है जिन्हें विद्यालय परिसर में विकसित किया जाएगा।

आधारभूत स्तर की पाठ्यचर्या, जिसमें कक्षा 1 और 2 भी समाहित हैं, सीखने के खेल आधारित उपागम को समुचित रूप से व्याख्यायित करती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार पाठ्यपुस्तकें सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंश हैं, तथापि यह समझना भी आवश्यक है कि पाठ्यपुस्तकें अनेक शिक्षाशास्त्रीय उपकरणों एवं पद्धतियों, जिनमें गतिविधियाँ, खिलौने, बातचीत आदि भी समाहित हैं, में से केवल एक उपकरण है। यह पुस्तकों से सीखने की प्रचलित प्रणाली से अधिक सुखद खेल आधारित एवं दक्षता आधारित अधिगम प्रणाली की ओर उन्मुख करती है जहाँ बच्चे का किसी कार्य को स्वयं करते हुए सीखना महत्वपूर्ण हो जाता है। अत: यह पाठ्यपुस्तक जो आपके हाथ में है, इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए खेल आधारित शिक्षाशास्त्रीय उपागम को प्रोत्साहित करने वाले एक उपकरण के रूप में देखी जानी चाहिए।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक दक्षता आधारित सामग्री को सरल, रोचक और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। इस पाठ्यपुस्तक को समावेशी एवं प्रगतिशील बनाने के लिए पाठों और चित्रों की प्रस्तुति के माध्यम से अनेक रूढ़ियों को तोड़ा गया है। परंपरा, संस्कृति, भाषा-प्रयोग तथा भारतीयता समेत स्थानीय संदर्भों की बच्चों के सर्वांगीण विकास में महती भूमिका इस पुस्तक में परिलक्षित होती है। इस पाठ्यपुस्तक को बच्चों के लिए आकर्षक एवं आनंददायी बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक में कला और शिल्प का बेजोड़ संयोजन है जिससे बच्चे गतिविधियों में अंतर्निहित सौंदर्यबोध की सराहना कर सकते हैं। यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को स्वयं से संबंधित अवधारणाओं को अपने संदर्भों में समझने की स्थितिजन्य जागरूकता प्रदान करती है। यद्यपि इनमें विषय-वस्तु का बोझ कम है, तथापि ये पाठ्यपुस्तकें सारगर्भित हैं। इस पाठ्यपुस्तक में खिलौनों और खेलों के माध्यम से सीखने की अलग-अलग युक्तियों के साथ-साथ अन्य गतिविधियाँ और प्रश्न, जो बच्चों में तार्किक चिंतन और समस्या को सुलझाने की योग्यता विकसित करने के लिए प्रेरित करते हैं, को भी सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यपुस्तकों में ऐसी पर्याप्त विषय सामग्री और गतिविधियाँ भी हैं जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता विकसित करने में सहायक हैं। साथ ही ये पाठ्यपुस्तकें हमारे राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की संस्तुतियों के अनुरूप उनके द्वारा विकसित किए जाने वाले संस्करणों में स्थानीय परिदृश्य के साथ-साथ अन्य तत्वों के समायोजन/अनुकूलन की संभावना भी उपलब्ध कराती हैं।

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री विकसित करने के लिए गठित समिति द्वारा किए गए कठोर परिश्रम की सराहना करती है। मैं समिति की अध्यक्षा प्रो. शशि कला वंजारी तथा अन्य सभी सदस्यों को समय पर और इतने उत्कृष्ट रूप से इस कार्य को संपन्न करने के लिए साधुवाद देता हूँ। मैं उन सभी संस्थानों और संगठनों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने इस कार्य को संभव बनाने में उदारतापूर्वक सहायता प्रदान की है। मैं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति के अध्यक्ष डॉ. के. कस्तूरीरंगन व इसके सदस्यों तथा मैंडेट समूह के अध्यक्ष प्रो. मंजुल भार्गव व अन्य सदस्यों के साथ ही समीक्षा समिति के सदस्यों को भी उनके समयोचित मार्गदर्शन एवं मूल्यवान सुझावों के लिए विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

एक संस्था के रूप में भारत की विद्यालयी शिक्षा में सुधार और इसके लिए विकसित अधिगम तथा शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता को निरंतर समुन्नत करने के लिए प्रतिबद्ध राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इन पाठ्यपुस्तकों को और अधिक परिष्कृत करने के लिए अपने समस्त हितधारकों से महत्वपूर्ण टिप्पणियों और सुझावों की अपेक्षा करती है।

प्रोफेसर दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

27 जनवरी 2023
नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक के बारे में

प्रिय शिक्षक साथियो,

आप जानते हैं कि सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक केवल एक उपकरण और माध्यम है जो बच्चों में उन अनंत क्षमताओं को विकसित करने में सहायक है जिनके बीज उनमें पहले से ही हैं। आप सभी से यह आग्रह है कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए और स्वतंत्र रूप से भी बच्चों को कक्षा-कक्ष के इर्द-गिर्द फैली अनंत प्रकृति से अवगत कराएँ; उन्हें स्वयं खोज-बीन करके सीखने के लिए प्रोत्साहित करें; उन्हें अपनी बात कहने के अवसर दें; सही-गलत का फैसला न लेते हुए बच्चों के साथ एक संवाद में शामिल हों।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार भाषा राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने और न्यायप्रिय समाज को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस नीति में बच्चों की शिक्षा में भाषा और साक्षरता के विकास को बहुत महत्व दिया गया है। यह माना जाता है कि भाषा और साक्षरता की ठोस नींव बच्चों के लिए अन्य विषयों को सीखने में बहुत सहायक होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) पर बच्चों में भाषा के विकास के साथ-साथ सतत सीखने की कला, समस्या-समाधान, तार्किक और रचनात्मक सोच के विकास पर भी बहुत बल दिया गया है। इस स्तर पर भाषा के साथ-साथ अन्य विषयों और गतिविधियों में भारतीय परंपरा, सांस्कृतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, नैतिकता, करुणा और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को समेकित रूप में सम्मिलित करने की भी अनुशंसा की गई है।

कक्षा 1 की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक ***सारंगी*** का सृजन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखा गया है –

1. पढ़ने-लिखने की शुरुआत के लिए बच्चों के जीवन से जुड़ी बातों को आधार बनाया गया है जिससे यह प्रक्रिया सहज और अर्थपूर्ण हो।
2. भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जो हमें संप्रेषण के साथ-साथ सोचने, समझने, प्रश्न पूछने आदि में सहायक है। रोचक बात यह भी है कि विभिन्न कार्यों के लिए जितना ज्यादा भाषा का प्रयोग होता है, उतनी ही तेजी से हमारी भाषा का विकास भी होता है। अत: इस पुस्तक में अपनी भाषा में बातचीत करने, सुनकर कुछ करने, कहानी और कविताओं का आनंद लेने, ध्वनि और शब्दों की पहचान के साथ खेलने, कला एवं संगीत से जुड़ी गतिविधियों में भाग लेने के अनेक अवसर दिए गए हैं। ये अवसर अलग-अलग संदर्भों में दिए गए हैं और बार-बार दिए गए हैं।
3. इस पुस्तक में पाँच ऐसे संदर्भों को चुना गया है जो बच्चों के जीवन से जुड़े हैं— **परिवार, जीव-जगत, हमारा खान-पान, त्योहार और मेले तथा हरी-भरी दुनिया।**

© NCERT not to be republished

4. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कक्षा में बच्चों के संदर्भ की वस्तुओं/घटनाओं/व्यक्तियों के साथ इस पुस्तक में दी गई पठन सामग्री को जोड़ा जाए। इस हेतु सुझाव भी दिए गए हैं।
5. हर पाठ में लगभग सारी दक्षताओं का ध्यान रखा गया है। बच्चों के दृष्टिकोण से पाठों को रोचक बनाने के लिए कार्यों में विविधता लाने का प्रयास किया गया है।

पाठ्यचर्या लक्ष्य

बुनियादी स्तर (फाउंडेशनल स्टेज) के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2022) में भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं –

- **CG-9 बच्चे दैनिक जीवन के लिए प्रभावी संप्रेषण की कुशलता विकसित करते हैं।**
- **CG-10 बच्चे पहली भाषा (L1) में पढ़ने और लिखने में निपुणता विकसित करते हैं।**

इस रूपरेखा के अनुसार भाषा सीखने-सिखाने के लिए भाषा-शिक्षण के चारों स्तंभों पर कार्य करना महत्वपूर्ण है। ये चार स्तंभ हैं— मौखिक भाषा का विकास, शब्द पहचान, पढ़ना और लिखना।

मौखिक भाषा का विकास – बेहतर ढंग से सुनकर समझना, मौखिक शब्दावली का विकास और साथियों व अन्य जानकार लोगों (जैसे– बड़े विद्यार्थी, शिक्षक, माता-पिता) के साथ बातचीत और चर्चा का उपयोग सीखने के लिए करना।

शब्द पहचान – इसमें प्रिंट जागरूकता और ध्वनि जागरूकता, प्रतीकों और ध्वनि का संबंध, लिखित शब्द पहचानना और शब्दों को लिखना शामिल है।

पढ़ना – लिखित सामग्री से अर्थ का निर्माण करना और इसके विषय में आलोचनात्मक/समीक्षात्मक ढंग से चिंतन करना।

लिखना – तार्किक और व्यवस्थित तरीके से विचारों या सूचनाओं की प्रस्तुति के साथ-साथ शब्दों को सही ढंग से लिखने की क्षमता।

इस पुस्तक में हर विषय के इर्द-गिर्द चुनी पठन सामग्री में इन चार स्तंभों को निम्न प्रकार से बाँटा गया है –

मौखिक भाषा का विकास

पुस्तक में अलग-अलग भाग हैं, जैसे– 'चित्र और बातचीत', 'कविता', 'आओ कुछ बनाएँ', 'खेल-खेल में' और 'खोजें-जानें'। इन सभी का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में मौखिक भाषा का विकास करना है। इसके साथ-साथ बच्चे मिलकर कुछ बनाते समय एक-दूसरे के विचारों को सुनेंगे, 'खोजें-जाने' क्रियाकलापों के दौरान अपने परिवार एवं समुदाय के लोगों के साथ बातचीत कर कुछ समझने का प्रयास करेंगे, आदि। उदाहरण के लिए, 'गिलहरी की कहानी' में चित्रों को देखकर कहानी बनाना और उसे अपनी भाषा में कहना/'अंगूठे की छाप' से अपनी पसंद के चित्र बनाना आदि।

शब्दों को पहचानना एवं गढ़ना

'शब्दों का खेल' कहानी और कविता के बाद दिया गया है। एक साथ पूरी वर्णमाला सीखने के बजाय कुछ वर्णों और मात्राओं से अवगत कराते हुए शब्द बनाने के कार्य दिए गए हैं, जैसे– 'आलू की सड़क'

© NCERT not to be republished

कहानी में ‘ब’ से शुरू होने वाले शब्दों को पहचानना और लिखना सिखाया गया है। ‘झूलम-झूली’ कविता में ‘उ’ और ‘ऊ’ ध्वनि की आकृति एवं उनकी मात्राओं की पहचान करना, शब्दों का दूसरा साथी खोजना, लिखना और पढ़कर सुनाना जैसे अभ्यास दिए गए हैं, जिसमें बच्चों से यह अपेक्षा की गई है कि वे छुप्पम, झूलम, पकड़म आदि शब्दों की समान लय वाले शब्द बनाएँगे। शब्दों के खेल में जो शब्द है, वे कविता या कहानी से लिए गए हैं। अन्य शब्द बच्चों के संदर्भ से ही लिए गए हैं और उनके भी चित्र दिए गए हैं, ताकि शब्दों का खेल सार्थकता से हो। आनंदमयी और सार्थक भाषा शिक्षा के लिए ‘आओ बूझें पहेली’ और ‘झटपट कहिए’ भी है। उदाहरण के लिए, ‘अप्पू के अप्पा अप्पम लेने अनोखे अनंत नगर आए’ आदि।

पढ़ना

‘सुनें कहानी’, ‘मिलकर पढ़िए’ और ‘कविता’ आदि भागों में बच्चों के लिए पढ़ने की विविध दक्षताओं को विकसित करने के अवसर हैं, जैसे मिलकर पढ़ते समय बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर और बाद में अपने मित्रों के साथ मिलकर पढ़ेंगे। पढ़ते समय कहानी के चित्रों को देखकर अनुमान लगाना, फिर कहानी सुनकर बातचीत करना, शब्दों को चित्र रूप में समझना, कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आदि से बच्चे ‘पढ़ना माने अर्थ गढ़ना’ संकल्पना को आत्मसात कर पाएँगे। उदाहरण के लिए, ‘होली’ कविता में समान लय वाले शब्द खोजने के लिए कहा गया है। इसी प्रकार ‘रानी भी’ कहानी में बातचीत के लिए ऐसे प्रश्न शामिल किए गए हैं कि “माँ ने रानी को स्कूल क्यों नहीं जाने दिया होगा?” ऐसे प्रश्न अनुमान लगाने में सहायता करेंगे।

लिखना

हम सभी जानते हैं कि लिखने की शुरुआत चित्रों से होती है और फिर चित्रों के साथ बच्चे शब्द और धीरे-धीरे वाक्य लिखना आरंभ करते हैं। यहाँ प्रयास किया गया है कि बच्चे अपने अनुभवों और विचारों को चित्रों के माध्यम से बताएँ और फिर उन पर कुछ शब्द शिक्षक की सहायता से लिखें। अन्य भाग जैसे ‘कविता’, ‘सुनें कहानी’ और ‘मिलकर पढ़िए’ आदि में भी लिखने के अवसर हैं। यहाँ लिपि को समझने और लिखने पर भी बल दिया गया है। उदाहरण के लिए, अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाकर लिखना, चित्रों को देखकर शब्द लिखना, दिए गए विषय पर अपनी बात कहना और लिखना। यह लेखन चित्र भी हो सकते हैं और वाक्य भी। इन सभी में शिक्षक की सहायता शामिल है।

बच्चों में इन सभी दक्षताओं के विकास के लिए यह आवश्यक है कि इन चारों स्तंभों पर नियमित रूप से कार्य हो। अत: इस पाठ्यपुस्तक में पाँच संदर्भों के इर्द-गिर्द पढ़ने, लिखने, शब्द पहचानने और बातचीत के विविध आयामों को सम्मिलित किया गया है। आइए, इन आयामों के विषय में सविस्तार चर्चा करें।

सृजनशील शिक्षक दी गई पठन-पाठन सामग्री को अत्यंत रोचक और प्रभावी तरीके से बच्चों के साथ मिलकर रच सकते हैं। यहाँ बस कुछ सुझाव हैं। हमें आशा है कि आप अपनी कक्षा में विविधता

© NCERT not to be republished

लाएँगे, बच्चों के संदर्भ के आधार पर शब्दों का खेल, खेल गीत, कविताएँ और कहानियाँ शामिल करेंगे। विविध संसाधनों की सहायता से कक्षा को और भी रोचक बनाएँगे।

बातचीत

इस पुस्तक में लिए गए पाँचों संदर्भों में बातचीत की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। उदाहरण के लिए, 'हमारा खान-पान' में आप बच्चों से निम्न प्रश्नों से बातचीत शुरू कर सकते हैं—

आगे आने वाले कुछ दिनों में हम 'हमारा खान-पान' के बारे में बातचीत करेंगे, पढ़ेंगे, लिखेंगे और समझेंगे। इसकी शुरुआत बातचीत से करेंगे। आपको खाने में सबसे ज्यादा क्या पसंद है? क्या आपको पता है कि वह कैसे बनता है? पता कीजिए कि आपकी कक्षा में मीठा, नमकीन और तीखा कितने बच्चों को पसंद है? खाना खाने से जुड़ी कुछ अच्छी आदतें बताइए। चिड़िया, कौआ, बत्तख, मेंढक आदि को खाने में क्या पसंद होगा?

जैसे-जैसे बच्चों के उत्तर आएँगे, उस तरह से बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है। बातचीत की यह गतिविधि हर दिन करवाई जा सकती है। एक दिन में सभी बच्चों को मौका नहीं मिल पाएगा, इसीलिए हर दिन यह गतिविधि कक्षा में करवाएँ। समय-सारणी में सर्कल टाइम के लिए जगह है। उस समय इस तरह की बातचीत को जगह दी जा सकती है।

'बातचीत' के अंतर्गत दी गई गतिविधियों का एक और महत्वपूर्ण पहलू है— बहुभाषिकता। अर्थपूर्ण सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में आवश्यक है कि बच्चे अपनी भाषा में खुलकर अपने विचार रख सकें। कक्षा-कक्ष की हर गतिविधि में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है।

सुनें कहानी

इसके अंतर्गत दी गई कहानियों को शिक्षक बच्चों को एक से अधिक बार पढ़कर सुनाएँ।

कुछ तरीके इस प्रकार हो सकते हैं— कहानी पढ़कर सुनाने से पूर्व बच्चों से कहानी के चित्र देखकर कहानी गढ़ने को कहें। यह कार्य आप बच्चों के छोटे समूह बनाकर करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए 'मीना का परिवार' कहानी पढ़ते समय बीच में बच्चों से एक या दो प्रश्न पूछें, जैसे– 'आपको क्या लगता है कि कहानी में आगे क्या होगा?' आदि। कहानी के बाद दिए गए 'बातचीत के लिए' प्रश्नों पर बच्चों से बातचीत कीजिए। यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं है, बल्कि प्रयास यह रहे कि बच्चे अपने मन की बात या उन्हें जो समझ में आया, वह निःसंकोच कह सकें। ये कुछ सुझाव हैं, इनके अतिरिक्त भी आप विविध क्रियाकलाप करवा सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'मिठाई' कहानी में बच्चों को कहानी में कुछ अन्य जानवरों को जोड़कर कहानी को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। बच्चे कहानी को अपनी भाषा में कक्षा या घर में सुना सकते हैं।

बातचीत के दौरान जो शब्द कहानी में और बातचीत में बार-बार आ रहे हैं, उन तीन से चार शब्दों को आप बोर्ड पर धीरे-धीरे लिखें। बच्चों से अनुमान लगाकर इन शब्दों की पहचान करने को भी कहा जा सकता है। जैसे-जैसे आगे बढ़ेंगे, बच्चे कुछ अन्य वर्ण और मात्राएँ पहचानना सीख जाएँगे। आप बच्चों

© NCERT not to be republished

को पिछले पाठों में आई कहानियों और कविताओं में से शब्दों को पहचानने का कार्य दें। इसी तरह की अन्य गतिविधियाँ भी करवाई जा सकती हैं।

मिलकर पढ़िए

इस हिस्से में उन कहानियों का चुनाव किया गया है, जिनमें दोहराव है। यह दोहराव वाक्यों के स्तर पर है। कहानी के कथानक में भी दोहराव है। आपने यह देखा होगा कि दोहराव में बच्चों को आनंद आता है। दोहराव से बच्चों को अनुमान लगाने में भी आसानी होती है। उदाहरण के लिए, 'भुट्टे' कहानी में 'नीना', 'नाना', 'नानी', 'भुट्टे' शब्दों में दोहराव है। इन कहानियों को पढ़ने से पूर्व चित्र दिखाकर बच्चों से बातचीत कीजिए। फिर उँगली रखते हुए बच्चों के साथ मिलकर कहानी पढ़िए। जिन शब्दों का दोहराव है, उन्हें बोर्ड पर लिख दीजिए। उनके चित्र बन पाएँ, तो अवश्य बनाइए। फिर, कहानी को पुन: पढ़िए और दूसरी बार पढ़ते समय दोहराव वाले वाक्यों पर बच्चों को अनुमान लगाने के लिए कहिए। कुछ दिनों बाद, छोटे समूह में बच्चों को मिलकर पढ़ने के लिए कहिए। उनका अवलोकन कीजिए। उन्हें जहाँ-जहाँ सहायता की आवश्यकता है, उन शब्दों को 'नोट' कर लीजिए। अगली कक्षा में इन शब्दों को आप 'शब्दों का खेल' में शामिल करके इन पर गतिविधियाँ करवा सकते हैं। इन सभी कार्यों का उद्देश्य यह है कि बच्चे दी गई पठन सामग्री को धीरे-धीरे पढ़ना सीख जाएँ। हमें याद रखना होगा कि हर बच्चे का सीखने का तरीका और गति अलग-अलग होती है। हम उन पर किसी भी प्रकार का दबाव बिल्कुल भी न डालें। हाँ, उन्हें सार्थक अवसर अवश्य दें और उनका उत्साहवर्धन करें। इस पुस्तक में 'मिलकर पढ़िए' में कई अवसर हैं। ऐसा इसीलिए, क्योंकि इन अवसरों से ही बच्चे पढ़ना सीखते हैं। आप भी पुस्तकालय से बच्चों को उनके स्तर के अनुरूप रोचक बाल साहित्य अथवा पुस्तकें अवश्य दें।

शब्दों का खेल

बच्चों की भाषा में जो शब्द अधिकतर आते हैं, उन शब्दों के वर्ण और स्वरों को ध्यान में रखते हुए 'वर्ण समूह' के आधार पर 'शब्दों का खेल' की रचना की गई है। उदाहरण के तौर पर, आप देखेंगे कि पहली इकाई में कहानियों के माध्यम से बच्चों को 'दादा', 'दादी', 'नाना', 'नानी', 'मामा', 'मामी', 'पिता', 'भाई', 'माँ' शब्दों के प्रिंट रूप से परिचित कराया गया है। फिर 'शब्दों का खेल' में परिवार के सदस्यों के नामों के साथ कार्य दिए गए हैं, जैसे इस कहानी में दिवाकर, दादाजी और दादीजी हैं। आँखें बंद करके इन शब्दों को बोलिए। इनकी पहली ध्वनि बताइए। फिर 'दादा', 'दादी' शब्द लिखने के लिए कहा गया है। इसी तरह से 'मीना', 'नाना', 'मामी' आदि शब्दों पर कार्य करवाया गया है। मीना, नानी, नाना, मामा आदि शब्दों का चुनाव भी इसी उद्देश्य से किया गया है कि शब्दों के खेल के बाद 'मिलकर पढ़ने' का कार्य बच्चे और अधिक आनंद के साथ कर पाएँगे। इसी तरह का प्रयास अन्य इकाइयों में भी किया गया है। शिक्षकों से अनुरोध है कि वे बच्चों की भाषा के अन्य शब्द भी लें और उनसे ध्वनियाँ पहचानने का कार्य करवाएँ। शब्दों को इमली के बीजों से या कंकड़ या छोटे पत्थरों से भी लिखने का प्रयास करवाया जा सकता है। फिर पेंसिल से लिखने में बच्चों को आसानी होती है। पुस्तक में पहेलियाँ भी दी गई हैं जिससे बच्चे अपने शब्द बना सकें, जैसे– 'दिए गए अक्षरों

© NCERT not to be republished

को जोड़कर अपने शब्द बनाइए' से संबद्ध अभ्यास। 'प्रश्न और पहेली' शीर्षक के अंतर्गत दी गई ये पहेलियाँ देखी जा सकती हैं— 'मेरे पिता के पिता, मेरे .....।', 'मेरे नाम का उल्टा उसका नाम, मैं हूँ नीरा तो वह है .....।', 'नीना की नानी का उल्टा है .....!' इसके अतिरिक्त शिक्षक भी इस तरह की पहेलियाँ बनाकर बच्चों को दें। हो सकता है कि कक्षा 1 के अंत तक बच्चे ही ऐसी पहेलियाँ एक-दूसरे के लिए बनाना सीख जाएँ!

पुस्तक के अंतिम पृष्ठों पर वर्णमाला का गीत दिया गया है। जैसे-जैसे बच्चे कुछ वर्ण सीख लें, उन्हें वर्णमाला से उन वर्णों की पहचान करने के लिए कहिए। इस गतिविधि से वे देख पाएँगे कि वर्णमाला में कितने स्वर और व्यंजन हैं; उन्होंने कितने सीख लिए हैं और कितने सीखने शेष हैं। बच्चों को आनंद के लिए वर्णमाला गीत भी मौखिक तौर पर गाने में मदद कीजिए।

आनंदमयी कविता

बच्चे हाव-भाव के साथ, अभिनय करते हुए कविताओं को गाएँ, जैसा कि हम अपनी कक्षाओं में हमेशा से ही करते आ रहे हैं। कविताओं को चार्ट पेपर पर बड़े अक्षरों में लिख दें। फिर गाते वक्त बच्चे इनको देखकर, शब्दों पर उँगली रखकर भी गा सकते हैं। कविताओं का आनंद लेना मुख्य उद्देश्य है, जैसे इकाई 2 'जीव-जगत' में 'कबरी झबरी बकरी' कविता में शब्दों का चयन और शब्दों का दोहराव बच्चों को कविता गाने का आनंद देता है। पूरी कविता 'बकरी', 'कबरी', 'झबरी' शब्दों के आस-पास घूमती है। इसके साथ-साथ कविताओं पर चर्चा करना, नई कविताएँ गढ़ना, कविताओं में आए शब्दों के साथ कार्य करना आदि अवसर भी दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, 'कबरी झबरी बकरी' कविता में बच्चों से यह कहा गया है कि वे 'झबरा', 'कबरा', 'बकरा' आदि शब्दों से तुकबंदी करते हुए नई कविता की रचना करें। ऐसे अनेक अवसर 'आनंदमयी कविता' का हिस्सा हैं।

चित्रकारी और लेखन

बच्चे चित्रों द्वारा खुद के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं। इन चित्रों में हमें बच्चों की अवलोकन क्षमता, विचार करने के कौशलों के कई प्रमाण मिलते हैं। इसीलिए लिखना सीखने की प्रक्रिया में चित्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए कक्षा 1 और 2 की पुस्तकों में 'चित्रकारी और लेखन' को सम्मिलित किया गया है, जैसे– 'दिए गए चित्र में आप क्या-क्या देख पा रहे हैं? कुछ नाम लिखिए।' हर गतिविधि संदर्भ आधारित है, उस पर कहानी या कविताएँ बच्चे पढ़ चुके हैं, बातचीत कर चुके हैं। उसके बाद उन्हें चित्रकारी और लेखन का कार्य दिया गया है। बच्चों से आप ऐसे भी किसी कविता या कहानी या अपने मन से चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। जो भी शब्द उन्होंने सीखे हैं, उन्हें लिखने में उनकी मदद कीजिए। उदाहरण के लिए, 'मेला' कविता के अंतर्गत दिया गया यह अभ्यास— 'मान लीजिए कि आप भी इस मेले में गए हैं। आप वहाँ क्या-क्या करेंगे? अपने मित्रों के साथ बातचीत कीजिए, चित्र बनाइए और कुछ शब्द भी लिखिए।' बच्चों के छोटे समूह में भी यह गतिविधियाँ आप करवा सकते हैं। बच्चे एक-दूसरे से भी बहुत कुछ सीखते हैं।

© NCERT not to be republished

खोजें-जानें

भाषा शिक्षण को बच्चों के संदर्भ से जोड़ने, संदर्भ से सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए इन गतिविधियों को शामिल किया गया है। इनसे बच्चों में अपने समुदाय की समझ बढ़ेगी। अपने घर और आस-पड़ोस का भी वे महत्व समझेंगे। उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्य के साथ आस-पास घूमना और छोटे-छोटे कीड़ों-मकोड़ों, जानवरों को देखना। वे क्या करते हैं; क्या खाते हैं; उनके रंग-रूप को देखना आदि। अपने आस-पास मिलने वाले पेड़-पौधों के नाम जानना और चित्र बनाना।

आओ कुछ बनाएँ

इन गतिविधियों का उद्देश्य है कि बच्चे जटिल कार्य के लिए मौखिक निर्देशों को समझें और उसी कार्य के लिए दूसरों को भी स्पष्ट मौखिक निर्देश दे सकें। इस कार्य में कला और भाषा के एकीकरण का प्रयास किया गया है। उदाहरण के लिए, 'अँगूठे की छाप से चित्र बनाना', 'कागज़ से कुत्ते का मुखौटा बनाना', 'तोरण बनाना' आदि।

खेल-खेल में

यहाँ पर खेल गीत गाना, खेलना, अभिनय करना आदि सम्मिलित किए गए हैं। खेल-खेल में निर्भीक अभिव्यक्ति कर पाने के अवसर देने से बच्चों की झिझक खत्म होती है, वे स्वयं के अनुभव को खुशी-खुशी सबके साथ साझा करने लगते हैं। शायद सीखने-सिखाने में यह सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव है। उदाहरण के लिए, साथियों के साथ कविता में दिए खेल खेलना और चित्र बनाकर परिवार के लोगों को बताना, मिट्टी से खिलौने बनाना आदि।

इस पुस्तक में 'झटपट कहिए', 'आओ बूझें पहेली' आदि जैसी कुछ अन्य रोचक गतिविधियाँ भी दी गई हैं, उदाहरण के लिए, 'घर-घर, घड़ी-घड़ी घड़ी घूमती!'/ 'भालू को आलू भाया, भाया भालू को आलू'। शिक्षक अपने स्तर पर भी इस प्रकार की कुछ और सामग्री खोजें, स्वयं तैयार करें और उपयोग में लाएँ। इन सबके साथ-साथ एक सतत चलने वाला आवश्यक काम यह है कि पाठ्यपुस्तक की हर इकाई पर कार्य करते हुए शिक्षक स्वयं और बच्चों की सहायता से कुछ-न-कुछ सीखने-सिखाने की सामग्री (TLM) बनाते रहें और उन्हें कक्षा की दीवार पर लगाएँ या अन्य उपयुक्त तरीके से बच्चों के लिए उपलब्ध रखें और उनका उपयोग भी शिक्षण प्रक्रिया में करें। हर इकाई में नई सामग्री की आवश्यकता होगी। उपलब्ध सामग्री में निश्चित रूप से कुछ पुस्तकें भी होनी चाहिए और नियमित रूप से बच्चे पुस्तकों के साथ काम करें, समय-सारणी में इसकी जगह हो।

हमें पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक इस पाठ्यपुस्तक की सामग्री का रचनात्मक उपयोग इसमें दिए उद्देश्यों और निर्देशों को ध्यान में रखते हुए करेंगे जिससे शिक्षण प्रभावी होगा और बच्चे आनंद के साथ भाषा सीखेंगे।

© NCERT not to be republished

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

परामर्श

दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

मार्गदर्शन

शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सदस्य समन्वयक, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति

सहयोग

कविता बिष्ट, *मुख्य अध्यापिका*, केंद्रीय विद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी. परिसर, नई दिल्ली
चमन लाल गुप्त, *आचार्य* एवं *पूर्व अध्यक्ष*, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश
चोन्हास ओराँव, *प्रभारी प्रधानाचार्य*, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जुरिआ, लोहरदागा, झारखंड
नम्रता दत्त, *प्रधानाचार्य* (सेवानिवृत्त), गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश
नरेंद्र सिंह निहार, *पी.जी.टी. हिंदी*, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सी ब्लॉक, संगम विहार, दिल्ली
निशा बुटोलिया, *सहायक आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
पटेल राकेश कुमार चंद्रकांत, हेड *टीचर*, नवा नदीसर प्राथमिक शाला, ब्लॉक गोधरा, पंचमहल, गुजरात
प्रिया यादव, जे.*पी.एफ.*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
बिनय पटनायक, *शिक्षा विशेषज्ञ*, झारखंड
मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप
याचना गुप्ता, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
रमेश कुमार, *सह आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
विजय कुमार चावला, *पी.जी.टी.* हिंदी, राजकीय मॉडल सह वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग, कैथल, हरियाणा

© NCERT not to be republished

विनोद 'प्रसून', *हिंदी विभागाध्यक्ष*, दिल्ली पब्लिक स्कूल, ग्रेटर नोएडा
सुमन कुमार सिंह, *मुख्य अध्यापक*, उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय, कौड़िया बसंती, भगवानपुर हाट, सिवान, बिहार
सैयद मतीन अहमद, *आचार्य*, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना

समीक्षा समिति

के.वी. श्रीदेवी, *सहायक आचार्य*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
गजानन लोंढे, *निदेशक*, संवित रिसर्च फाउंडेशन, बेंगलुरु
ज्योत्स्ना तिवारी, *अध्यक्ष* एवं *आचार्य*, जेंडर अध्ययन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
निशा बुटोलिया, *सहायक आचार्य*, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु
भरतभाई धोकई, *निदेशक*, कच्छ कल्याण संघ, समर्थ भारत, कच्छ, गुजरात
भारती कौशिक, *सह आचार्य*, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप
रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
शशिकला वंजारी, *पूर्व कुलपति*, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुंबई, महाराष्ट्र
अध्यक्ष, पाठ्यक्रम एवं अधिगम-शिक्षण सामग्री विकास समिति
सी.वी. शिमरे, *आचार्य*, गणित एवं विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
सुनीति सनवाल, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

सदस्य समन्वयक

उषा शर्मा, *आचार्य*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
नीलकंठ कुमार, *सहायक आचार्य* (हिंदी), सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के. कस्तूरीरंगन, *अध्यक्ष*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति और समिति के सभी अन्य सदस्यों तथा मंजुल भार्गव, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति एवं *अध्यक्ष*, मैंडेट ग्रुप और समिति के सभी सदस्यों; दिव्यांशु दवे, *संस्थापक निदेशक* एवं *पूर्व महानिदेशक*, सेंटर फॉर इनर एक्सीलेंस और *कुलपति (प्रभारी)*, बाल विश्वविद्यालय, गाँधीनगर, गुजरात तथा श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति इस पुस्तक की समीक्षा में बहुमूल्य योगदान के लिए आभार व्यक्त करती है।

इस पुस्तक में रचनाओं को सम्मिलित करने की स्वीकृति देने के लिए परिषद् सभी रचनाकारों या उनके परिजनों एवं प्रकाशकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है। परिषद् रचनाओं के प्रकाशनार्थ अनुमति देने के लिए जयंती मनोकरन, बेंगलुरु एवं *अध्यक्ष*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली (कितनी प्यारी है यह दुनिया); *प्रकाशक*, तूलिका प्रकाशन, चेन्नई (*काम* पुस्तक से 'रसोई' और *श्यामपट्ट* पुस्तक से 'पेंसिल' एवं 'मछली'); *प्रकाशक*, एकलव्य प्रकाशन, भोपाल (चंदा मामा दूर के, मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ, तीन साथी, हाथ हैं मेरे छोटे-छोटे); प्रभात, जयपुर (ईख बोली, कबरी झबरी बकरी); श्याम सुशील, दिल्ली (झूलम-झूली, कौन परिंदा); सुशील शुक्ल, भोपाल (खट-पट); चंदन यादव, भोपाल (आलू की सड़क, खतरे में साँप); रमेश तैलंग, मुंबई (वाह, मेरे घोड़े!); मनोज कुमार झा, पटना (रोटी अगर गोल न बने); रमेश थानवी, जयपुर (मेला); आस्तिक सिन्हा, गाज़ियाबाद (बरखा और मेघा); मधुर अथैया, बिहार (होली); आनंदवर्धन शर्मा, वाराणसी (श्रीप्रसाद की रचना 'दादा-दादी', 'बंद रहेगा', 'हम पढ़ते हैं' के लिए); राजा चौरसिया, कटनी (जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ); शिवचरण सरोहा, दिल्ली, (हवा); अफ़सर मेरठी (चाँद का बच्चा); मीरा भार्गव, यू.एस.ए. (मीना का परिवार); मंजुल भार्गव, यू.एस.ए. (अक्षर गीत) के प्रति आभारी है।

परिषद्, रचनात्मक एवं जीवंत चित्रांकन के लिए पद्मश्री दुर्गा बाई, *लोक चित्रकार* (गोंड शैली, मध्य प्रदेश), भोपाल, मध्य प्रदेश; मयूख घोष, कोलकाता, पश्चिम बंगाल; राधेश्याम खैरवार, *लोक चित्रकार* (गोंड शैली, मध्य प्रदेश), भोपाल, मध्य प्रदेश; शुभम लखेरा, चंदेरी गाँव, मध्य प्रदेश; संतोष, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर*, नई दिल्ली; हबीब अली, ग्वालियर, मध्य प्रदेश एवं अमृता यादव, भोपाल मध्य प्रदेश के प्रति आभार प्रकट करती है।

© NCERT not to be republished

पुस्तक विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए परिषद् साकेत, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग एवं ऋचा प्रसाद, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; मोहन शर्मा एवं कहकशां, *सहायक संपादक*, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प.; तरुण कुमार नोंगिया एवं मोहम्मद आतिर, *ग्राफ़िक डिज़ाइनर*, अयाज़, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* एवं जितेंद्र कुमार, *टाइपिस्ट,* राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प.; प्रियंका एवं गिरीश, *डी.टी.पी ऑपरेटर*, पूजा साहा, *अर्द्ध पेशेवर सहायक* (*एस.पी.ए.*), सपना, *टाइपिस्ट*, चंचल, *कंप्यूटर ऑपरेटर* एवं अभिनव प्रकाश, *एस.आर.ए.,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करती है।

परिषद् विशेष रूप से ग्रीन ट्री डिज़ाइनिंग स्टूडियो प्रा.लि., नई दिल्ली का आभार प्रकट करती है जिनके अथक परिश्रम से यह पुस्तक इस रूप में आ सकी है।

इस पुस्तक को प्रकाशन हेतु अंतिम रूप देने के लिए परिषद् प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. तथा जे.पी. मैठाणीं, *सलाहकार संपादक* (संविदा), अतुल मिश्र, *संपादक* (संविदा), पवन कुमार बारियार, *इंचार्ज*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ, रियाज़ एवं उपासना, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की सराहना करती है।

© NCERT not to be republished

कहाँ क्या है?

आमुख iii

पाठ्यपुस्तक के बारे में vii

इकाई 1: परिवार

1. मीना का परिवार 2

* चंदा मामा दूर के 7

2. दादा-दादी 8

3. रीना का दिन 11

4. रानी भी 16

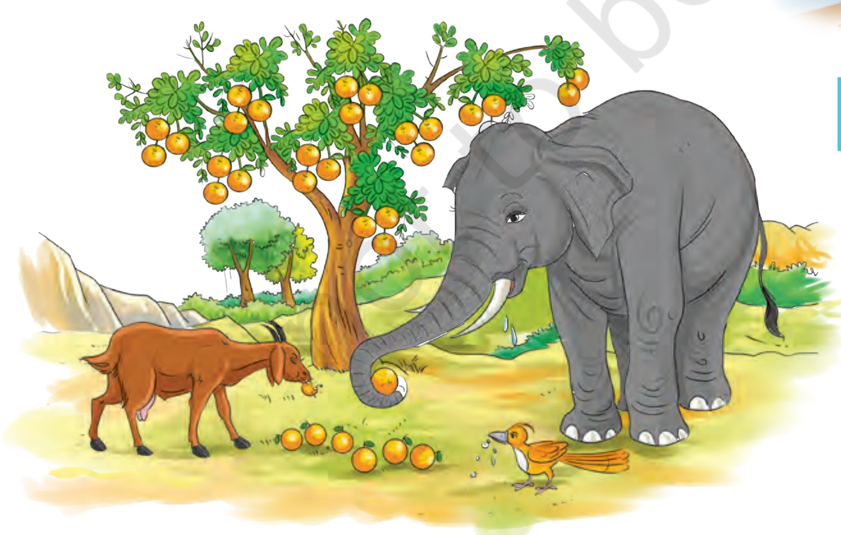

इकाई 2: जीव-जगत

* मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ 25

5. मिठाई 28

6. तीन साथी 34

* तारांकित पाठ केवल पढ़ने के लिए हैं।

© NCERT not to be republished

7. वाह, मेरे घोड़े! 43
8. खतरे में साँप 46
* कबरी झबरी बकरी 50

इकाई 3: हमारा खान-पान

9. आलू की सड़क 54
10. झूलम-झूली 60
11. भुट्टे 67
12. फूली रोटी 70

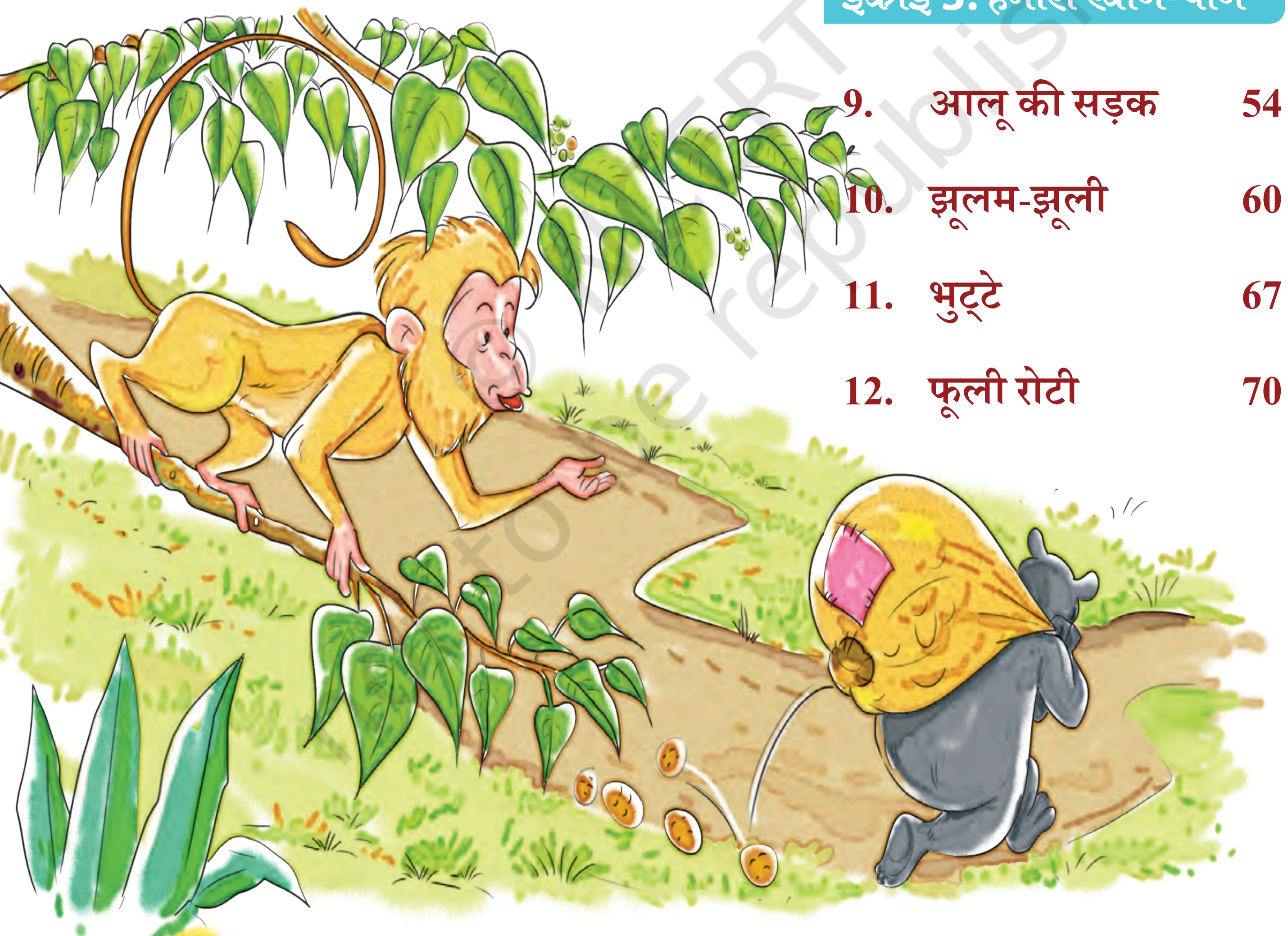

© NCERT not to be republished

इकाई 4: त्योहार और मेले

13. मेला 80

14. बरखा और मेघा 85

15. होली 87

16. जन्मदिवस पर पेड़ लगाओ 91

इकाई 5: हरी-भरी दुनिया

17. हवा 94

18. कितनी प्यारी है ये दुनिया 98

19. चाँद का बच्चा 103

* अक्षर गीत 111

© NCERT not to be republished